तृतीयः पाठः

सदाचारोपदेशः

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना: उपासते।।१।।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।२।।

मधुमन्मे निष्क्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसदृशः।।३।।

आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम्।
आचारात् कीर्तिमाप्नोति पुरुषः प्रेत्य चेह च।।४।।

ये नास्तिकाः निष्क्रियाश्च गुरुशास्त्रातिलङ्घिनः।
अधर्मज्ञा दुराचारास्ते भवन्ति गतायुषः।।५।।

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
उत्थायाचम्य तिष्ठेत पूर्वां सन्ध्यां कृताञ्जलिः।।६।।

अक्रोधनः सत्यवादी भूतानामविहिंसकः।
अनुसूयुरजिह्मश्च शतं वर्षाणि जीवति।।७।।

अकीर्तिं विनयो हन्ति हन्त्यनर्थं पराक्रमः।
हन्ति नित्यं क्षमा क्रोधमाचारो हन्त्यलक्षणम् ।।८।।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।।९।।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।१०।।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते।।११।।

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।।१२।।

(संकलित)

अभ्यास प्रश्न

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

१. विद्या केन रक्ष्यते?
२. धर्मः केन रक्ष्यते?
३. धर्मस्य सर्वस्वं किमस्ति?
४. कः शतं वर्षाणि जीवति?
५. अकीर्तिम् कः हन्ति?
६. अभिवादनशीलस्य कानि वर्द्धन्ते?
७. के पुरुषाः गतायुषः भवन्ति?
८. सदाचारस्य किं महत्वम्?
९. मनुष्यः आचारात् किं किं लभते?
१०. कुलं केन रक्ष्यते?

➡ अनुवादात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी-अनुवाद कीजिए–

(क) संगच्छध्वं .... उपासते।
(ख) श्रूयतां .... समाचरेत्।
(ग) आचाराल्लभते .... प्रेत्य चेह च।
(घ) ब्राह्मे मुहूर्ते .... कृताञ्जलिः।
(ङ) अभिवादनशीलस्य .... यशोबलम्।
(च) वृत्तं यत्नेन .... हतोहतः।
(छ) अक्रोधनः .... जीवति।
(ज) अकीर्ति विनयो .... हन्त्यलक्षणम्।
(झ) सत्येन रक्ष्यते .... वृत्तेन रक्ष्यते।
(ञ) ये नास्तिकाः .... गतायुषः।
(ट) मधुमन्ने .... मधुसदृशः।
(ठ) कुर्वन्नेवेह कर्माणि .... कर्म लिप्यते नरे।

२. निम्नलिखित सूक्तिपरक वाक्यों की ससन्दर्भ हिन्दी-व्याख्या कीजिए–

(क) वृत्ततस्तु हतो हतः।
(ख) मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते।
(ग) आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
(घ) विद्या योगेन रक्ष्यते।

(ङ) आचारात् कीर्तिमाप्नोति।

(च) कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

(छ) आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम्।

(ज) सत्येन रक्ष्यते धर्मः।

(झ) आचारो हन्त्य लक्षणम्।

(ञ) वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्।

(ट) अधर्मज्ञा दुराचारास्ते भवन्ति गतायुषः।

(ठ) सं गच्छध्वं संबदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

३. **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) सदाचार से मनुष्य आयु प्राप्त करता है।

(ख) मनुष्य को ब्राह्ममुहूर्त में उठना चाहिए।

(ग) चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए।

(घ) सत्य से धर्म की रक्षा होती है।

➡ व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **धर्मार्थौ** एवं **महापुरुषः** में विग्रह सहित समास बताइए।

२. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—**

ह्यायुः, धर्मार्थौ, वृद्धोपसेविनः।

शब्दार्थ

संगच्छध्वम् = साथ-साथ चलो। **संवदध्वम्** = साथ-साथ बोलो। **सं वो मनांसि जानताम्** = (वः मनांसि सञ्जानताम्) **वः** = अपने। **मनांसि** = मनों को। **सञ्जानताम्** = मिलकर जानो। **एवं** = इस प्रकार। **वाचा** = वाणी से। **उपासते** = पूजा करते थे। **जिजीविषेत्** = जीने की इच्छा करनी चाहिए। **शतं समाः** = सौ वर्ष। **मधुमद्** = मधुर। **निष्क्रमणं** = प्रवृत्ति। **परायणम्** = निवृत्ति। **प्रेत्य** = मृत्यु के पश्चात् परलोक में। **इह** = इस लोक में। **अनुसूयुः** = निन्दा न करनेवाला। **गतायुषः** = मृत (मरे हुए)। **अक्रोधनः** = क्रोध न करनेवाला। **अजिह्म (ऋजु)** = जो कुटिल न हो। **अलक्षणम्** = बुराई। **वृत्तम्** = चरित्र। **मृजया** = स्वच्छता या सफाई से। **वृत्तेन** = सदाचार से। **श्रूयताम्** = सुनो। **धर्मसर्वस्वम्** = धर्म का सार। **अवधार्यताम्** = धारण करो।

●●